सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की

चाहे जिन्दगी जितनी भी कठिन लगे, आप हमेशा कुछ न कुछ कर सकते हैं और सफल हो सकते हैं।
-स्टीफन हॉकिंग

मूल्य ₹ 3/-

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंकः 19 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 20 फरवरी, 2026

अजेय रहते हुए सुपर-8 में पहुंचा... 7 | रास चुनावों के ऐलान के साथ... 3 | भाजपा ने देश की संप्रभुता को भी... 2

झूठे शपथपत्र की पड़ेगी मार गिर सकती है नीतिश सरकार!

42 विधायकों पर लटका अयोग्यता का खतरा

» चुनावी शपथपत्र में गलत जानकारी पर पटना हाईकोर्ट ने जारी किया नोटिस

4पीएम न्यूज नेटवर्क

पटना। बिहार की राजनीति एक बार फिर न्यायपालिका के दरवाजे पर खड़ी है। पटना हाईकोर्ट द्वारा हाल के विधानसभा चुनाव में जीतकर आये 42 विधायकों को नोटिस जारी किया गया है। जिन लोगों को नोटिस जारी किया गया है उनमें कई विधायक नीतिश की सरकार में मंत्री भी बन चुके है। अधिकतर विधायक सरकार में शामिल राजनीतिक दलों से हैं।

नोटिस के बाद बिहार की राजनीति में हड़कंप की स्थिति हैं। क्योंकि शपथपत्र का झूठ सीधे विधायकी खत्म करने के लिए काफी होता है। ताजा प्रकरण ने सत्ता के समीकरण को अनिश्चितता के भंवर में डाल दिया है। मामला चुनावी शपथपत्र में कथित गलत जानकारी का आरोप साबित हो जाए तो सीधे विधायकी खत्म कर सकता है। और अगर ऐसा होता है तो इसका असर केवल 42 सीटों तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि यह पूरे सत्ता ढांचे को हिला सकता है। यह सिर्फ एक कानूनी प्रक्रिया नहीं बल्कि एक ऐसा घटनाक्रम है जो बिहार की मौजूदा सरकार के अस्तित्व पर सीधे सवाल खड़े कर दिये हैं। क्योंकि लोकतंत्र में सरकार का अस्तित्व संख्या पर टिका होता है और अगर वही संख्या अदालत के फैसले से बदल जाए तो कुर्सी भी बदल सकती है।

सरकार का नंबर गेम, डगमगा सकता है सत्ता का संतुलन

बिहार विधानसभा में कुल 243 सीटें हैं। सरकार बनाने के लिए 122 विधायकों का समर्थन जरूरी होता है। फिलहाल नीतिश कुमार के नेतृत्व वाली सरकार स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार चला रही है। लेकिन अगर अदालत के फैसले के बाद 42 विधायकों की सदस्यता समाप्त हो जाती है तो सत्ता का पूरा गणित बदल सकता है। अगर अयोग्यता का दायरा सत्ताधारी गठबंधन के विधायकों तक पहुंचा तो सरकार बहुमत खो सकती है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह मामला केवल व्यक्तिगत विधायकों का नहीं बल्कि पूरे गठबंधन की स्थिरता का सवाल बन सकता है। क्योंकि भारतीय राजनीति में कई सरकारें सिर्फ एक या दो विधायकों के अंतर से गिर चुकी हैं।

बिहार में संभावित राजनीतिक भूकंप

अगर पटना हाईकोर्ट इस मामले में सख्त रुख अपनाता है और बड़ी संख्या में विधायकों को अयोग्य घोषित करता है तो बिहार में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ सकती है। इससे न केवल सरकार का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है बल्कि राज्य में फिर से चुनाव की स्थिति भी बन सकती है। विपक्ष पहले ही इस मुद्दे को लेकर आक्रामक हो गया है और इसे लोकतंत्र की पारदर्शिता से जोड़ रहा है। वहीं सत्ताधारी गठबंधन इस मामले को कानूनी प्रक्रिया बताते हुए अदालत के फैसले का इंतजार कर रहा है।

जब चली गयी थी विधायकी

यह पहला मौका नहीं है जब शपथपत्र में गलत जानकारी देने के कारण किसी जनप्रतिनिधि को अपनी कुर्सी गंवानी पड़ी हो। सबसे चर्चित उदाहरण समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खा के बेटे अब्दुल्ला आजम का है। अब्दुल्ला आजम की विधायकी इलाहाबाद हाईकोर्ट ने रद्द कर दी थी क्योंकि उन्होंने चुनावी शपथपत्र में अपनी उम्र से संबंधित गलत जानकारी दी थी। अदालत ने इसे गंभीर अपराध माना और उनकी सदस्यता समाप्त कर दी। इसी तरह कई अन्य मामलों में भी अदालतों ने सख्त रुख अपनाया है जिससे यह स्पष्ट हो गया है कि शपथपत्र में गलत जानकारी देना केवल औपचारिक गलती नहीं बल्कि संवैधानिक उल्लंघन है।

याचिका में गंभीर आरोप

दालत में दायर याचिका में यह भी कहा गया है कि निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान नियमों का पालन सुनिश्चित नहीं किया गया है और जनता को गुमराह किया गया है। पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता शशिभूषण मंगलम के मुताबिक पूरा मामला चुनाव के नामांकन के दौरान दायर शपथपत्र में गलत जानकारी देने से जुड़ा है। याचिका में कहा गया है कि तथ्यों को छिपाया गया है, जो सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का उल्लंघन है। इसमें कुछ शिकायतकर्ता हारे हुए उम्मीदवार हैं तो कई मतदाता हैं। इस मामले की सुनवाई के बाद 42 विधायकों को नोटिस जारी किया गया है। बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए को बड़ी जीत मिली थी। राजद 25 सीटों में ही सिमट गई थी, जबकि कांग्रेस को सिर्फ छह सीटों पर जीत मिली थी। सबसे अधिक फायदा भाजपा और जदयू को हुआ था। भाजपा को जहां 89 सीट मिली थी, वहीं जदयू के खाते में 85 सीट गई थी। चिराग पासवान की पार्टी लोजपा (रामविलास) के 19 उम्मीदवार विजयी घोषित किए गए थे। जीतनराम मांझी की हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा को पांच सीटें मिलीं, जबकि उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक मोर्चा ने चार सीटों पर जीत दर्ज की थी।

शपथपत्र में गलत जानकारी सिर्फ तकनीकी गलती नहीं सीधा अयोग्यता का आधार

चुनाव के दौरान हर उम्मीदवार को चुनाव आयोग के सामने शपथपत्र देना होता है। इसमें उसकी संपत्ति आपराधिक मामले शिक्षा और अन्य व्यक्तिगत जानकारियों का खुलासा करना अनिवार्य होता है। यह केवल एक औपचारिक दस्तावेज नहीं है बल्कि पारदर्शिता और मतदाता के अधिकार का आधार है। अगर कोई उम्मीदवार जानबूझकर गलत जानकारी देता है या तथ्य छुपाता है तो यह जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के तहत गंभीर अपराध माना जाता है। ऐसे मामलों में अदालत न केवल चुनाव को रद्द कर सकती है बल्कि संबंधित विधायक की सदस्यता भी समाप्त कर सकती है। पटना हाईकोर्ट ने इसी आधार पर 42 विधायकों से जवाब मांगा है। अदालत यह जानना चाहती है कि क्या इन विधायकों ने चुनाव के समय अपने शपथपत्र में पूरी और सही जानकारी दी थी या नहीं।

भाजपा ने देश की संप्रभुता को भी गिरवी रख दिया : अखिलेश

» ट्रंप के दावे को लेकर साधा केंद्र सरकार पर निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा व मोदी सरकार पर निधाना साधा है। उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत के 11 जेट विमान गिरने का दावे को लकर सरकार को कटघरे में खड़ा किया है। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार और भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा है।

उन्होंने कहा कि बीजेपी ने संप्रभुता को भी गिरवी रख दिया है। सरकार को अपना पक्ष साफ़ करना चाहिए। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर अमेरिकी राष्ट्रपति के बयान को टैग करते हुए भाजपा पर हमला किया। उन्होंने पूछा कि ये हमारे देश के सम्मान का मामला है। सरकार को इस पर अपनी स्पष्टीकरण देना चाहिए कि उस दिन क्या हुआ था? अमेरिकी ट्रेड डील की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि क्या डील ने मुँह पर सील लगा दी है।

सपा अध्यक्ष ने ट्रेड डील पर फिर उठाए सवाल

अखिलेश यादव ने एक्स पर लिखा, क्या डील ने मुंह पर सील लगा दी है? या तो बात साफ की जाए कि उस दिन क्या हुआ था या बाहरी हस्तक्षेप के दावों को ख़ारिज किया जाए। भाजपाई राजनीति ने अब क्या संप्रभुता को भी गिरवी रख दिया है।

स्पष्टीकरण दे सरकार

उन्होंने आगे लिखा, देश के नागरिकों, किसानों, कारोबारियों और मजदूरों का हित तो भाजपा सरकार ने इस डील के माध्यम से पहले ही गिरवी रख दिया है। जब देश में न खेती होगी, न कारखाने-मिलें चलेंगी, न छोटे-बड़े उद्योग तो आम जनता को काम-रोजगार कहाँ मिलेगा। युवक-युवतियों का भविष्य कैसे बनेगा? ये देश के सम्मान का मामला है। स्पष्टीकरण अपेक्षित है।

योगी आदित्यनाथ के जापान दौरे पर अखिलेश यादव का तंज, कहा- क्योटो भी चले जाइएगा

अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जापान दौरे पर तंज कसा है। पूर्व सीएम अखिलेश ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा जापान जा रहे हैं तो क्योटो भी चले जाइएगा, जिससे ये पता चल सके कि प्रधान-संसदीय क्षेत्र काशी, क्योटो जैसा क्यों नहीं बन पाया या उसकी विरासत कैसे बिगड़ी। जापान से विरासतों को बचाने और शहरों को आगे बढ़ाने का सकारात्मक सबक लेते आइएगा। 2027 के चुनाव के संदर्भ में अखिलेश ने लिखा कि वैसे अब चला-चली की बेला में अपने अंतिम वर्ष में कौन सा तो ये जापान का अध्ययन कर लेंगे और क्या ही योजना बना पाएंगे। ये मुख्यमंत्री का 'मनसुख-पर्यटन' है, अगर वो स्वीकार कर लें, तो जाते-जाते कम-से-कम एक सच बोलने के लिए उन्हें लोग याद रखेंगे। कन्नौज सांसद ने लिखा कि 'वनस्पति के विशेष अध्ययन' का व्यक्तिगत लाभ ही उठाएंगे या अपने करीबियों से भी साझा करेंगे।

मंत्री के नहीं मेरे कहने पर सिंचाई के लिए अफसरों ने छोड़ा पानी : शिवपाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा नेता शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि योगी सरकार की ओर से सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण के लिए पेश किए गए बजट में भ्रष्टाचार, अक्षमता और दिखावटीपन ज्यादा है। कई योजनाओं में वास्तविक व्यय कम हुआ है।

रखरखाव और मेंटीनेंस में कटौती की गई है। बजट में बुंदेलखंड और पूर्वांचल के बजट में कटौती की गई है। शिवपाल ने जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह पर टिप्पणी करते हुए कहा कि मैंने सिंचाई के लिए नहरों में पानी छोड़ने के लिए आपको कॉल किया लेकिन पानी नहीं छोड़ा गया फिर मैंने खुद अधिकारियों को फोन किया तो पानी मिला। इतने समय तक मंत्री रहने के बाद भी अधिकारी आपकी नहीं सुनते कहीं तो कमी है।

नीतीश-भाजपा सरकार बिहार की बेटियों के लिए बनी काल : तेजस्वी यादव

» परीक्षा केंद्र पर एंट्री नहीं मिलने से छात्रा के जान देने पर भड़के राजद नेता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। पटना से सटे मसौढ़ी थाना क्षेत्र में एक मैट्रिक की छात्रा की रेलवे ट्रैक से लाश मिली थी। वह मैट्रिक की छात्रा थी। परीक्षा केंद्र पर 10 मिनट देरी होने के चलते एंट्री नहीं मिली तो उसने जान दे दी। इस पर विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने शुक्रवार (20 फरवरी, 2026) को सरकार को घेरते हुए हमला बोला। कहा की नीतीश-भाजपा सरकार बिहार की बेटियों के लिए काल है।

अपने एक्स पोस्ट में तेजस्वी यादव ने लिखा है, बिहार की बेटियों का काल बनी नीतीश-भाजपा सरकार। पटना जिले के मसौढ़ी थाना क्षेत्र की कोमल कुमारी दसवीं की छात्रा थी। मां-बाप की उम्मीद और सुनहरे भविष्य की आशा 10वीं कक्षा की पहली परीक्षा थी। जाम और अव्यवस्था के चलते परीक्षा केंद्र पहुंचने में कुछ मिनटों की देरी हो गई और उसे परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं मिला। उसके लिए बिहार सरकार सारे दरवाजे बंद कर चुकी थी. यह केवल स्कूल का दरवाजा ही नहीं था बल्कि दरवाजा उसके भविष्य का, उसकी सफलता का, उसकी नियति का और सबसे बढ़कर दरवाजा उसके जीवन का। कोमल कुमारी ने गुहार लगाई, मिन्नतें की कि उसे परीक्षा में बैठने दिया जाए पर किसी का दिल नहीं पसीजा। अंत में इस सरकारी व्यवस्था से निराश, हताश और परेशान होकर बिहार की इस कोमल बेटी ने कठोर बन ट्रेन के आगे कूद कर अपनी जान दे दी। तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहारी होने के नाते हम दुखी हैं, गमजदा हैं और हताश हैं।

परिजनों को मुआवजा देने की मांग

तेजस्वी यादव ने सरकार से परिजनों को मुआवजा देने की मांग की है। साथ ही बड़ी अपील की है कि जाम आदि के कारण चंद मिनटों से परीक्षा केंद्र पर देरी से पहुंचने पर प्रवेश दिया जाए। एक बेटी की जान एक दो मिनट से कहीं ज्यादा कीमती और अमूल्य है।

मेरे ऊपर लगे आरोप झूठे पर मुकदमे का सामना करने को तैयार : तेज प्रताप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। कथित भूमि-बदले-नौकरी घोटाले में एक महत्वपूर्ण घटनाक्र म में जनशक्ति जनता दल (जेजेपी) के नेता तेज प्रताप यादव सीबीआई मामले के सिलसिले में कोर्ट में पेश हुए। अदालत की कार्यवाही के दौरान, तेज प्रताप ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि वे मुकदमे का सामना करेंगे। अदालत ने औपचारिक रूप से उनके खिलाफ आरोप तय किए और उन्हें भविष्य की सुनवाईयों में व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट दी।

इससे पहले 16 फरवरी को, आरजेडी के वरिष्ठ नेता लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी ने भी इसी मामले में अपने ऊपर लगे आरोपों को नकार दिया था। अदालत में पेशी के दौरान उन्होंने आरोपों को पूरी तरह से खारिज कर दिया। राउज़ एवेन्यू कोर्ट ने जमीन के बदले नौकरी मामले में लालू प्रसाद यादव और बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के खिलाफ औपचारिक रूप से आरोप तय कर दिए। लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी अदालत में पेश हुए, आरोपों से इनकार किया और कहा कि वे मुकदमे का सामना करेंगे। यह मामला रेलवे ग्रुप डी की नौकरी के बदले जमीन देने के कथित अपराध से संबंधित है। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी के खिलाफ आरोप तय किए। अदालत ने यह भी कहा कि आरोपियों को व्यक्तिगत रूप से पेश होना होगा, जब तक कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की अनुमति न दी जाए। मीसा भारती ने कहा, उनकी उम्र और स्वास्थ्य को देखते हुए अदालत ने उन्हें वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पेश होने के लिए कहा है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

तमिलनाडु के मछुआरों को केंद्र ने दोयम दर्जे का नागरिक बना दिया : वाइको

» एमडीएमके प्रमुख ने सौतेले व्यवहार की कड़ी निंदा की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। एमडीएमके प्रमुख वाइको ने केंद्र पर तमिलनाडु के मछुआरों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए श्रीलंका के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार का सौतेला रवैया मछुआरों के साथ विश्वासघात है और अगर श्रीलंका को कड़ी चेतावनी दी जाती तो वे हमले बंद कर देते।

मरुमलार्ची द्रविड़ मुन्नेत्र कज़गम (एमडीएमके) के प्रमुख वाइको ने केंद्र सरकार पर तमिलनाडु के मछुआरों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार करने का आरोप लगाया और समुद्र में बार-बार हो रही गिरफ्तारियों और हमलों के लिए श्रीलंका के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। वाइको ने कहा कि भारत सरकार हमारे मछुआरों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार कर रही है। मैं केंद्र सरकार के इस सौतेले व्यवहार की कड़ी निंदा करता हूं। मछुआरे भी भारत के नागरिक हैं, लेकिन सरकार उनके साथ विश्वासघात कर रही है। अगर श्रीलंका को कड़ी चेतावनी दी जाए, तो वे हमारे मछुआरों और उनकी नावों को नहीं पकड़ेंगे।वाइको ने आरोप लगाया कि चार दशकों से अधिक समय से तमिलनाडु के मछुआरे श्रीलंकाई नौसेना द्वारा गिरफ्तारी, गोलीबारी और नौकाओं की जब्ती का सामना कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछले 45 वर्षों से, तमिलनाडु के हमारे मछुआरे जब भी अपने ही समुद्री क्षेत्र में मछली पकड़ने जाते हैं, उन पर श्रीलंकाई नौसेना द्वारा हमला किया जाता है। मछली पकड़ने के जाल क्षतिग्रस्त हो गए हैं, नौकाएँ नष्ट हो गई हैं, और कई नौकाओं को ज़ब्त करके श्रीलंका ले जाया गया है। कई नौकाएँ वहीं पड़ी रह गईं और रखरखाव की कमी के कारण जर्जर हो गईं। यह एक दैनिक घटना बन गई है।

रास चुनावों के ऐलान के साथ ही सियासी घमासान

हरियाणा से लेकर बिहार तक बिछने लगी बिसात

राज्यसभा की 37 सीटों पर सबकी नजर

» एनडीए व इंडिया गठबंधन में रणनीति बनना प्रारंभ

» ओडिशा में दो सीटों पर भाजपा की जीत तय, बीजेडी को मिल सकती है एक सीट

» इस चुनाव का सियासत पर भी असर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राज्यसभा की 37 सीटों पर चुनाव की तारीख का एलान कर दिया गया है। चुनाव आयोग ने बताया कि इन 37 सीटों के लिए 16 मार्च को चुनाव होंगे। इनमें महाराष्ट्र की सात, पश्चिम बंगाल और बिहार की 5-5 सीटों पर चुनाव कराया जाएगा। वहीं ओडिशा की चार, तमिलनाडु की छह असम की तीन, छत्तीसगढ़ की दो, हरियाणा की दो, तेलंगान की दो और हिमाचल प्रदेश की एक राज्यसभा सीट पर चुनाव होना है।

इस घोषणा के साथ ही सियासी तनाव भी बढ़ गया है। सभी सियासी दल अपनी-अपनी गणित में लग गए है। 26 फरवरी को नोटिफिकेशन जारी होगा। 5 मार्च को नामांकन भरे जाएंगे और 6 मार्च को नामांकन पत्रों की जांच होगी। 9 मार्च तक नामांकन पत्र वापस लिए जा सकेंगे। 16 मार्च को सुबह 9 बजे से 4 बजे तक मतदान होगा और 16 मार्च को ही वोटों की गिनती होगी। 20 मार्च 2026 से पहले चुनाव पूरा होना है। जिन दिग्गज नेताओं का राज्यसभा कार्यकाल अप्रैल 2026 में समाप्त हो रहा है, उनमें शरद पवार, प्रियंका चतुर्वेदी, कनिमोझी, साकेत गोखले, उपेंद्र कुशवाहा, राज्यसभा के डिप्टी स्पीकर हरिवंश नारायण सिंह, रामनाथ ठाकुर और अभिषेक मनु सिंघवी आदि शामिल हैं।

महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन को लाभ

महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन को विधानसभा में अपनी मजबूत स्थिति का फायदा मिलेगा। वहीं तमिलनाडु और बंगाल में क्रमश: डीएमके और टीएमसी को ज्यादा सीटें मिलने की उम्मीद है। हालांकि लेफ्ट के बंगाल में शून्य होने के बाद एक सीट भाजपा के खाते में जा सकती है। बिहार में भाजपा गठबंधन की मजबूत स्थिति को देखते हुए यहां पांच में से चार सीटें एनडीए को मिल सकती हैं। तेलंगाना में कांग्रेस आगे रहेगी और हिमाचल प्रदेश में एक सीट पर कड़ी टक्कर हो सकती है।

इनेलो व निर्दलीय साथ आए तो भी भाजपा को चाहिए 9 अतिरिक्त वोट

राज्यसभा का पूरा चुनाव रणनीति व समीकरण पर आधारित होगा। भाजपा चाहेगी वह दो उम्मीदवार उतारे। यानी पहली सीट पर भाजपा अपने एक उम्मीदवार को 31 वोट देकर जिता देगी। दूसरी सीट पर जब भाजपा उम्मीदवार उतारेगी तो चुनाव होगा। यदि उम्मीदवार नहीं उतारा तो भाजपा व कांग्रेस के पास एक-एक सीट जाएगी। दूसरी सीट के लिए भाजपा के पास केवल 17 वोट बचेंगे। निर्दलीय के तीन व इनेलो के दो वोट उनके पक्ष में जाते हैं तो भी उन्हें जीत के लिए 9 क्रॉस वोट चाहिए होंगे यानी कांग्रेस के नौ विधायक अगर भाजपा के प्रत्याशी के हक में वोट करेंगे तभी जीत संभव है।

राज्यसभा चुनाव कार्यक्रम

- नोटिफिकेशन- 26 फरवरी
- नामांकन की अंतिम तिथि- 5 मार्च
- नामांकन जांच- 6 मार्च
- नाम वापसी- 9 मार्च तक
- मतदान-16 मार्च
- परिणाम-16 मार्च

कुशवाहा की जगह कोई और

एनडीए के पास मौजूद तीसरी सीट पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा के पास है, जो विवेक ठाकुर के लोकसभा चुनाव जीतने के कारण हुए उपचुनाव में भाजपा के समर्थन से 2025 में उच्च सदन में पहुंचे थे। हालांकि कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण सहयोगी पार्टी है, जो शक्तिशाली ओबीसी जाति कोइरी के वोटों का एक बड़ा हिस्सा देने का वादा करती है। एनडीए सूत्रों का मानना है कि उन्होंने अपना बदला ले लिया है, क्योंकि उनके बेटे दीपक प्रकाश विधानसभा सदस्य न होते हुए भी राज्य मंत्रिमंडल में शामिल हो गए हैं। नियमों के अनुसार, प्रकाश को अपनी सीट बरकरार रखने के लिए मई तक राज्य विधानसभा के किसी भी सदन में निर्वाचित होना आवश्यक है। 243 सदस्यीय विधानसभा में उनकी पार्टी के पास उनकी मां स्नेहलता सहित केवल चार विधायक हैं, इसलिए आरएलएम प्रमुख के बेटे को विधान परिषद में सीट हासिल करने के लिए जेडीयू और भाजपा जैसे बड़े सहयोगी दलों के समर्थन पर काफी हद तक निर्भर रहना होगा। शेष दो सीटें राज्य की प्रमुख विपक्षी पार्टी आरजेडी के पास हैं, जिसके पास अब केवल 25 विधायक बचे हैं, जो बहुत कम संख्या है।

हरियाणा में कांग्रेस के लिए विधायकों की एकजुटता व भाजपा के लिए सीट बचाना चुनौती

हरियाणा से किरण चौधरी व रामचंद्र जांगड़ा का कार्यकाल 9 अप्रैल को खत्म हो रहा है। फिलहाल दोनों सीटें भाजपा के पास हैं लेकिन विधानसभा के मौजूदा आंकड़ों के अनुसार भाजपा व कांग्रेस के खाते में एक-एक सीट जाने की संभावना है। भाजपा को दूसरी सीट भी अपने पास ही रखने के लिए नौ अतिरिक्त वोट चाहिए। इसके लिए पार्टी पूरा जोर लगाएगी। पिछले कुछ चुनावों में वोटों की संख्या पूरी नहीं होने के बावजूद भाजपा चुनाव जीतने में सफल रही है, ऐसे में कांग्रेस के लिए अपने विधायकों को एकजुट रखना व भाजपा से सीट छीनना चुनौती से कम नहीं होगा। भाजपा के लिए भी दोनों सीटें जीतकर मजबूत दावेदारी पेश करने की बड़ी चुनौती है। चुनाव की घोषणा के साथ ही कांग्रेस व भाजपा में दावेदारों के नाम पर चर्चा शुरू हो गई है। भाजपा से कुलदीप बिश्नोई व पूर्व मंत्री कैप्टन अभिमन्यु का नाम दावेदारों में शामिल हैं। किरण चौधरी भी दोबारा से राज्यसभा जाने के लिए प्रयासरत हैं। सूत्रों के अनुसार भाजपा एक सीट पर अपने कार्यकर्ता को खड़ा करेगी और दूसरी सीट से सुभाष चंद्रा व कार्तिकेय शर्मा जैसे किसी दिग्गज उम्मीदवार को उतार सकती है। कांग्रेस से प्रभारी बीके हरिप्रसाद, पवन खेड़ा व पूर्व प्रदेशाध्यक्ष उदयभान का नाम चर्चा में है।

जीत के लिए चाहिए 31 वोट, कांग्रेस के पास पर्याप्त आंकड़ा

राज्यसभा चुनाव के लिए विधायकों की संख्या और राज्यसभा की सीटों की संख्या के आधार पर राज्यसभा वोटों की संख्या तय की जाती है। इस चुनाव के लिए कुल विधायकों की संख्या ×100/(राज्यसभा की सीटें+1)= +1 फार्मूला लागू होता है। हरियाणा विधानसभा में कुल 90 सदस्य हैं। हर विधायक के वोट की वैल्यू 100 होती है। इसे उदाहरण से समझते हैं। हरियाणा की दो राज्यसभा सीटों पर चुनाव होने हैं। सबसे पहले कुल विधायकों को 100 से गुणा करते हैं, जो 9000 बनती है। कुल सीटों में एक जोड़ते हैं तो संख्या तीन बनती है। अब 9000 में तीन से भाग देते हैं तो 3000 आता है। इसमें एक और जोड़ेंगे। यानी 3001 जोड़ बनता है। यानी किसी उम्मीदवार को जीतने के लिए कम से कम 31 विधायकों का समर्थन (31 x 100 = 3100) जरूरी है।

बिहार में राज्यसभा की 5 सीटों के चुनाव ने राजनीतिक सरगर्मी बढ़ी

बिहार में राज्यसभा की 5 सीटों के चुनाव ने राजनीतिक सरगर्मी बढ़ा दी है, जहां NDA मजबूत स्थिति में है और कमजोर विपक्ष की सीटें छीनने की कोशिश कर सकता है। असली पेंच JDU में फंसा है, जिसे अपनी दो-कार्यकाल नीति के तहत केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर और उपसभापति हरिवंश पर फैसला लेना है, जिससे पार्टी की भविष्य की रणनीति स्पष्ट होगी। बिहार में राजनीतिक हलचल मचने की आशंका है। राज्यसभा की पांच सीटों के लिए चुनाव घोषित हो चुके हैं, जिनमें से तीन सीटें सत्तारूढ़ एनडीए के पास हैं। ऐसा लग रहा है कि गठबंधन बाकी बची सीटों को भी कमजोर विपक्ष से छीनने की स्थिति में है। चुनाव आयोग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया 26 फरवरी से शुरू होगी और मतदान 16 मार्च को होगा। इनमें से दो सीटें फिलहाल मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू के पास हैं। दोनों मौजूदा सांसद, केंद्रीय मंत्री और भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर के पुत्र राम नाथ ठाकुर और राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह, लगातार दूसरी बार सांसद बने हुए हैं। गौरतलब है कि जेडीयू सुप्रीमो कुमार ने कुछ साल पहले पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आरसीपी सिंह को लगातार तीसरी बार सांसद बनने से रोक दिया था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा देना पड़ा था। उस समय पार्टी ने इस फैसले को यह कहकर सही ठहराया था कि किसी भी व्यक्ति को लगातार दो कार्यकाल से अधिक राज्यसभा सीट न देना पार्टी की नीति है। पार्टी सूत्रों ने इस बात पर चुप्पी साध रखी थी कि क्या इस बार कोई अपवाद होने की संभावना है, क्योंकि घोषित नीति का पालन करने से दोनों मौजूदा सांसदों को उनके संवैधानिक पदों से वंचित होना पड़ेगा।

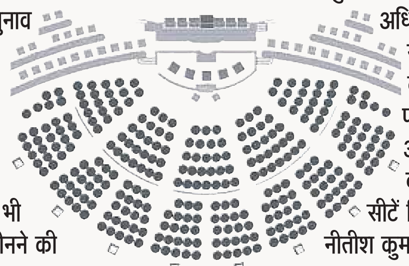

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

अस्पतालों में बुजुर्गो की बीमारियों से लड़ने की सुविधाएं बढ़ें

"सबसे ज्याद परेशानी बुजुर्गो को उठानी पड़ती है। उन्हें शारीरिक ही नहीं मानसिक परेशानी भी झेलनी पड़ती है। ऐसे में उनके लिए चिकित्सा सरकारी अस्पतालों में आवयश्क है। किसी भी राज्य की स्वास्थ्य सुविधाओं से जुड़ी व्यवस्थाओं का असली चेहरा आंकड़ों में नहीं बल्कि अस्पतालों में मौजूद सुविधाओं से नजर आता है।

इन दिनों यूपी में स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर विस से लेकर सड़क तक बवाल मचा है। कहीं मेडिकल उपकरण तो कहीं समुचित मानव संसाधन की कमी की वजह से मरीज परेशान हो रहे है। सबसे ज्याद परेशानी बुजुर्गो को उठानी पड़ती है। उन्हें शारीरिक ही नहीं मानसिक परेशानी भी झेलनी पड़ती है। ऐसे में उनके लिए चिकित्सा सरकारी अस्पतालों में आवयश्क है। किसी भी राज्य की स्वास्थ्य सुविधाओं से जुड़ी व्यवस्थाओं का असली चेहरा आंकड़ों में नहीं बल्कि अस्पतालों में मौजूद सुविधाओं से नजर आता है। सरकारें जब अस्पतालों में जरूरी सुविधाओं से ही कन्नी काटने लगे तो यह चिंता और बढ़ जाती है। कई राज्यों बड़े सरकारी अस्पताल से जुड़ी यह चिंता बुजुर्गों से जुड़ी है। कई जगह सब सुविधाएं नहीं है। कही हैं तो बंद हैं।

जैसे अभी हाल में राजस्थान के एक अस्पताल इम्प्लांट की कमी से महीनों से घुटना प्रत्यारोपण (नी-ट्रांसप्लांट) बंद होने और राजस्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम (आरजीएचएस) में बुजुर्गों के लिए जरूरी दवाएं सूची से गायब होने से सवाल सिर्फ प्रबंधन का ही नहीं, संवेदनशीलता का भी उठता है। तीन महीने से घुटना प्रत्यारोपण ठप हो और सैकड़ों बुजुर्ग अपनी बारी के लिए तारीखों पर तारीखें झेलने को मजबूर हों तब बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं का दावा खोखला लगता है। कमोवेश हाल हर राज्यमें है। सवाल यह है कि जब नियमित रूप से ऑपरेशन होते रहे, तो इम्प्लांट आपूर्ति की वैकल्पिक योजना क्यों नहीं बनी? दूसरी ओर आरजीएचएस में कैल्शियम, आयरन, विटामिन और प्रोटीन जैसी मूलभूत दवाइयों का हटाया जाना बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर सीधा प्रहार है। उम्र के इस पड़ाव पर यही दवाएं उनकी हड्डियों की मजबूती, पोषण और प्रतिरोधक क्षमता की नीव होती है। यदि कुछ मेडिकल स्टोर्स में गड़बड़ी हुई, तो उसका समाधान निगरानी और पारदर्शिता है, न कि पूरी सूची से दवाएं हटाकर हजारों पेंशनर्स को बाजार की महंगाई के हवाले कर देना। यह नीति नहीं, सजा है। यह संकट सिर्फ स्वास्थ्य तंत्र की खामी नहीं, हमारी सामाजिक सोच का आईना भी है। समाधान कठिन नहीं, बस इच्छाशक्ति चाहिए। सरकार को चाहिए कि जीवन-रक्षक उपकरण और इम्प्लांट की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए वैकल्पिक आपूर्ति चैनल बनाएं। टेंडर प्रकिया को समयबद्ध व पारदर्शी करें। आरजीएचएस में आवश्यक पोषण वाली दवाइयों को तुरंत बहाल कर निगरानी तंत्र मजबूत किया जाए। हर जिले में ऑर्थोपेडिक व जेरियाट्रिक क्लीनिक में संसाधन बढ़ाए जाएं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

नये परिदृश्य में हसीना के प्रत्यर्पण का यक्ष प्रश्न

पुष्परंजन

शेख हसीना, जो 5 अगस्त, 2024 को हिंसक प्रदर्शनकारियों से जान बचाते हुए ढाका से गाजियाबाद के लिए एक सीक्रेट फ्लाइट से भागी थीं, अभी फांसी से दूर हैं, और नई दिल्ली निर्वासन में रह रही हैं। शेख हसीना का सवाल विक्रम और बेताल की तरह मोदी सरकार के कंधे पर सवार है। चूंकि प्रधानमंत्री मोदी को 'एआई समिट' में उपस्थित रहना था, इसलिए तारिक रहमान के शपथ ग्रहण समारोह में उन्होंने ढाका, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला को भेजा। बांग्लादेश की तरफ से उन्हें सौंपने के बार-बार अनुरोध के बावजूद भारत में हसीना की मौजूदगी पिछले 18 महीनों में दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के बीच झगड़े की एक बड़ी वजह रही है। भले ही भारत, ढाका के साथ 'पोस्ट हसीना पार्टनरशिप' बनाने के लिए उत्सुक है, लेकिन कई जियोपॉलिटिकल एनालिस्ट ने कहा, कि वे ऐसे हालात की कल्पना नहीं कर सकते, जिसमें नई दिल्ली पूर्व प्रधानमंत्री को मौत की सजा का सामना करने के लिए बांग्लादेश को सौंप दे।

ढाका रह चुके भारत के पूर्व हाई कमिश्नर पिनाक रंजन चक्रवर्ती ने कहा, 'नई दिल्ली उन्हें मौत की तरफ कैसे धकेल सकती है?' हसीना, बांग्लादेश की सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहीं, वो शेख मुजीबुर रहमान की सबसे बड़ी बेटी हैं। शेख मुजीबुर रहमान ने 1971 में पाकिस्तान से आजादी की लड़ाई का नेतृत्व किया था। शेख हसीना कोई पहली बार भारत में शरणागत नहीं हुई हैं। 15 अगस्त, 1975 को बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर रहमान की ढाका में उनके धानमंडी स्थित घर पर मिलिट्री तख्तापलट के दौरान हत्या कर दी गई थी। इस हमले में उनकी पत्नी, तीन बेटे और दूसरे रिश्तेदार मारे गए थे। उनकी दो बेटियां संयोगवश बच गयीं, जो घटना के समय जर्मनी में थीं। उनमें एक शेख हसीना और दूसरी शेख रेहाना थीं। हसीना के पास अपने पति एमए वाजेद मियां के साथ भारत में शरण लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। वर्ष 1975 से 1981 तक वे सभी दिल्ली के पंडारा रोड में एक नकली पहचान के साथ रहे।

लेकिन अब नरेंद्र मोदी सरकार, हसीना के 'निर्वासन पार्ट-टू' को लेकर दुविधा में है। हसीना ने 2022 के इंटरव्यू में मुजीबुर रहमान की हत्या के बाद के पलों को याद करते हुए कहा, 'मिसेज इंदिरा गांधी ने तुरंत जानकारी भेजी, कि वह हमें सुरक्षा और पनाह देना चाहती हैं।' दिल्ली आने के बाद, हसीना इंदिरा गांधी से मिलीं, तभी उन्हें अपने परिवार

के 18 सदस्यों की हत्या के बारे में पता चला। हसीना ने 2022 में एक न्यूज एजेंसी को बताया, 'इंदिरा गांधी ने हमारे लिए सारे इंतजाम किए। मेरे पति के लिए नौकरी भी।' दिल्ली में हसीना पहले 56 रिंग रोड, लाजपत नगर-3 में रहती थीं, फिर दिल्ली के पंडारा रोड के घर में शिफ्ट हो गईं। छह साल बाद, 17 मई, 1981 को, हसीना बांग्लादेश लौटीं। वापसी के बाद देश पर कब्जा कर चुकी मिलिट्री सरकार के खिलाफ एक लंबी और मुश्किल लड़ाई की शुरुआत की। करप्शन के आरोपों में जेल के बावजूद, हसीना डटी रहीं। आखिरकार, 1996 में शेख हसीना सत्ता में आईं। लेकिन उस कालखंड से इस समय अलग परिस्थितियां हैं। पीएम मोदी बांग्लादेश के सन्दर्भ में अपनी पूर्ववर्ती इंदिरा गांधी की राह पर चले जरूर, मगर इसके अंजाम का आकलन मोदी के रणनीतिकार सही से नहीं कर पाए। वर्ष 2013 में भारत-बांग्लादेश के बीच प्रत्यर्पण संधि हुई थी। और 2016 में इसमें बदलाव किया गया था, जो कम से कम एक साल की जेल की सजा वाले अपराधों के दोषी या अभियुक्तों की अदला-बदली की अनुमति देती है। इसमें आतंकवाद, ट्रैफिकिंग और ऑर्गनाइज्ड क्राइम जैसे अपराध शामिल हैं, लेकिन यदि कोई राजनीतिक कैदी है, तो उसके प्रत्यर्पण से मना करने की सहूलियत भी संधि में है। 11 पेज की संधि के अनुच्छेद 6-7 और 8 को ध्यान से पढ़ा जाये, तो शेख हसीना को आपराधिक धाराओं से भी छूट मिल जाती है। भारत इन्हीं धाराओं के आधार पर शेख हसीना के प्रत्यर्पण से मना करने की स्थिति में है। इस संधि पर हस्ताक्षर करने वाले तत्कालीन गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे और उनके समकक्ष डॉ. मोहिनुद्दीन खान आलमगीर अभी जीवित हैं। बहरहाल, 17 नवंबर, 2025 को 453 पेज के फैसले में, बांग्लादेश की इंटरनेशनल क्राइम्स ट्रिब्यूनल (आईसीटी) ने शेख हसीना और दो सह-आरोपियों को दो अलहदा मामलों में मौत की सजा सुनाई थी।

उन्हें पिछले साल 5 अगस्त को ढाका के चंखारपुल में छह निहत्थे प्रदर्शनकारियों की गोली मारकर हत्या करने के आरोप संख्या 4 के तहत मौत की सजा सुनाई गई थी। आरोप संख्या 5 के तहत, आरोपियों पर उसी दिन अशुलिया में छह छात्र प्रदर्शनकारियों को गोली मारने का आरोप था, जिनमें से पांच को बाद में जला दिया गया था, जबकि छठे को कथित तौर पर जिंदा रहते हुए आग लगा दी गई थी।

पारिवारिक पाठशाला डाल सकती है नशाखोरी पर नकेल

अभिमन्यु राव

नशे के अधिकांश मामले तनाव, चिंता या भावनात्मक अस्थिरता से जुड़े होते हैं। ऐसे में योग और प्राणायाम को केवल व्यायाम समझना भूल होगी। ये मन को स्थिर करने वाले वैज्ञानिक अभ्यास हैं, जो तनाव को कम करते हैं और आत्म-नियंत्रण को बढ़ाते हैं।

आज के समय में, नशा सबसे खतरनाक चुनौतियों में से एक बन गया है। ऐसी चुनौती जिसे केवल स्वास्थ्य समस्या मानकर हल नहीं किया जा सकता। नशा व्यक्ति की इच्छा शक्ति को खोखला करता है, परिवारों को अस्थिर करता है और समाज के भविष्य को कमजोर बनाता है। यह समस्या जिस गति से फैल रही है, उसे रोकने के लिए पारंपरिक उपाय पर्याप्त नहीं होंगे। आवश्यक है कि हम इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को गहराई से समझें और सामूहिक स्तर पर हस्तक्षेप करें। नशा मुक्ति की राह दवाइयों और पुनर्वास केंद्रों से होकर जरूर गुजरती है, लेकिन इसकी शुरुआत कहीं गहरी-परिवार, समाज और शिक्षा के त्रिभुज में होती है। यही त्रिकोण तय करता है कि नई पीढ़ी किस दिशा में जाएगी, निर्माण की ओर या विनाश की ओर। हर समाज की पहली पाठशाला परिवार ही होता है। ?

बच्चों में जो आदतें, स्वभाव और भावनात्मक धारणा विकसित होती है, उसकी नींव घर में ही रखी जाती है। इसलिए नशे के खिलाफ सबसे प्रभावी हस्तक्षेप परिवार में ही संभव है। घर में मौजूद कलह, निरंतर दबाव या अभिभावकों की भावनात्मक दूरी, ये तीनों बच्चे को मानसिक तौर पर कमजोर बनाते हैं। यह कमजोरी ही उन्हें गलत संगत की ओर धकेल सकती है। इसके विपरीत, ऐसा परिवार जो संवाद को महत्व देता हो, अनुशासन को सहजता से लागू करता हो और जहां बच्चों को समझने की कोशिश हो, वहां बच्चों का मनोबल मजबूत होता है। इसलिए नीतियों और योजनाओं में परिवार-केंद्रित हस्तक्षेप, जैसे पैरेंटिंग वर्कशॉप, पारिवारिक परामर्श, तनाव प्रबंधन को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। यह सच है कि आज का बच्चा अभूतपूर्व दबावों के बीच बढ़ रहा है। प्रतिस्पर्धा का दायरा बढ़ गया है, सोशल मीडिया ने तुलना की संस्कृति को और गहरा कर दिया है और उपलब्धि को ही मूल्यांकन का मानक बना दिया है।

जब एक किशोर यह महसूस करता है कि वह 'पीछे छूट रहा है', तब उसके भीतर अधूरापन और बेचैनी जन्म लेती है। यही मानसिक असुरक्षा उसे गलत आदतों की तरफ खींच सकती है। बच्चों को वह वातावरण देना होगा, जहां वे सुरक्षित महसूस करें, अपनी अभिव्यक्ति के लिए जगह पाएं और रचनात्मक गतिविधियों में हिस्सा लेकर ऊर्जा को सकारात्मक दिशा दें। सामुदायिक खेल मैदान, कला-संगीत केंद्र, वाद-विवाद और विज्ञान मंच—ये केवल गतिविधियां नहीं, बल्कि एक स्वस्थ समाज की सुरक्षा दीवारें हैं। वे बच्चों को व्यस्त रखते हैं, उनकी रुचियों को पहचानते हैं और उन्हें अर्थपूर्ण गतिविधियों से जोड़ते हैं। नशे के अधिकांश मामले तनाव, चिंता या भावनात्मक अस्थिरता से जुड़े होते हैं। ऐसे में योग और प्राणायाम को केवल व्यायाम समझना भूल होगी।

ये मन को स्थिर करने वाले वैज्ञानिक अभ्यास हैं, जो तनाव को कम करते हैं और आत्म-नियंत्रण को बढ़ाते हैं। स्कूलों और समुदायों में दिन की शुरुआत प्राणायाम से करना बच्चों में मानसिक प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा सकता है। एक शांत मन न केवल बेहतर निर्णय लेता है, बल्कि गलत आकर्षणों के प्रभाव से भी बचा रहता है। मानसिक स्वास्थ्य को हमारा समाज अब भी पर्याप्त महत्व नहीं देता। परिणामस्वरूप, बच्चे अपनी भावनाओं को दबाते हैं। अत: मानसिक स्वास्थ्य को शिक्षा और सामाजिक कार्यक्रमों में केंद्रीय स्थान मिलना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य जब केवल नौकरी तक सीमित हो जाता है, तब बच्चों पर दबाव बढ़ना लाज़मी है। शिक्षा हमेशा से मानवता, विवेक और चरित्र-निर्माण का आधार रही है। ऐसे विद्यार्थी जिनके भीतर उद्देश्य की स्पष्टता हो, जिनकी शिक्षा रुचि आधारित हो और जिनका आत्मविश्वास मजबूत हो, वे गलत आदतों की ओर कम आकर्षित होते हैं। इसलिए शिक्षा प्रणाली को ऐसे परिवेश पर जोर देना चाहिए जहां प्रतियोगिता की जगह सहयोग हो, अंक की जगह व्यक्तित्व विकास को प्राथमिकता मिले और बच्चों को विकल्पों, रुचियों और कौशलों के अनुरूप आगे बढ़ाया जाए।

शिक्षक और अभिभावक को समझना होगा कि दबाव सफलता नहीं, बल्कि यह केवल बेचैनी पैदा करता है। नशे में फंसा व्यक्ति अपराधी नहीं, एक पीड़ित है। परिवार, शिक्षकों और समाज को चाहिए कि वे ऐसे व्यक्तियों के लिए खुला, सम्मानजनक और सहयोगी वातावरण बनाएं। जब कोई व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसके लिए रास्ता बंद नहीं हुआ है, तभी वह नशा छोड़ने की दिशा में पहला कदम उठा पाता है। नशा केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की परीक्षा भी है। परिवार का वातावरण, समाज का चरित्र, शिक्षा की दिशा, मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक गतिविधियों का प्रोत्साहन, ये सभी मिलकर ही इस चुनौती को परास्त कर सकते हैं। नशा मुक्ति एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक सामाजिक संकल्प है। यदि हम सामूहिक रूप से इस दिशा में आगे बढ़ें तो आने वाली पीढ़ी को नशे की गिरफ्त से मुक्त कर एक सशक्त, संवेदनशील और जागरूक समाज की ओर ले जा सकते हैं।

ये हैं कारण

आईसीएमआर के नेशनल सेंटर फॉर डिजीज इन्फॉर्मेटिक्स एंड रिसर्च, बेंगलुरु के शोधकर्ताओं ने लिखा, जिन महिलाओं को देर से मेनोपॉज होता है (50 साल से अधिक उम्र में), 30 की उम्र के बाद पहली प्रेग्नेंसी, शादी के समय अधिक उम्र होना, कई बार अबॉर्शन और पेट पर चर्बी अधिक होना (कमर और कूल्हे का अनुपात 85 सेंटीमीटर से ज्यादा) होता है, उनमें भविष्य में कैंसर होने का खतरा अधिक होता है। विशेषज्ञों की टीम ने पाया कि 50 से ज्यादा उम्र की महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर होने की आशंका तीन गुना अधिक थी, जबकि 35-50 साल की उम्र की महिलाओं में यह खतरा 1.63 प्रतिशत अधिक देखा गया।

सर्वाइकल कैंसर

शोधकर्ताओं ने कहा, भारतीय लोगों में बेली फैट की समस्या का प्रतिशत अधिक है। यह उन कारणों में से एक है जिसकी वजह से भारत में ब्रेस्ट कैंसर का खतरा तेजी से बढ़ा है। मोटापा और बेली फैट तो खतरनाक है ही, इसके साथ-साथ लो बीएमआई को भी कैंसर के संभावित खतरे के पीछे की वजह पाया गया है। मसलन अगर आपको कैंसर से बचे रहना है कि शरीर के वजन को कंट्रोल में रखना जरूरी है साथ ही इस बात पर भी ध्यान देने चाहिए कि आपके पेट पर चर्बी न बनने पाए। महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर भी चिंता का विषय है। यह कैंसर मुख्य रूप से एचपीवी संक्रमण और नियमित जांच की कमी से जुड़ा हुआ है। समय पर स्क्रीनिंग और टीकाकरण से इसे काफी हद तक रोका जा सकता है, लेकिन जागरूकता की कमी के कारण इसके कई मामले देर से सामने आते हैं।

महिलाओं में तेजी से बढ़ रहा कैंसर

कैंसर वैश्विक स्तर पर बढ़ती गंभीर स्वास्थ्य समस्या है जो हर साल लाखों लोगों की मौत का कारण बनती है। भारत में भी कैंसर के मामले तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। साल 2024 में भारत में कैंसर के मामलों में काफी बढ़ोतरी हुई। अनुमान के मुताबिक इस साल लगभग 1.53 मिलियन (15 लाख से अधिक) नए मामले सामने आए। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद का अनुमान है कि अगर कैंसर के बढ़ने की गति ऐसे ही जारी रहती है तो साल 2050 तक इस जानलेवा बीमारी का बोझ काफी अधिक हो सकता है। अध्ययनों में बदलती जीवनशैली, पर्यावरणीय बदलाव और खानपान की आदतों को कैंसर का खतरा बढ़ाने वाला पाया गया है। पहले जहां कैंसर अधिकतर बुजुर्गों में देखा जाता था, वहीं अब युवा और मध्यम आयु वर्ग के लोग भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। बता दें भारत में इन कैंसर के मामले सबसे अधिक देखे जा रहे हैं?

ब्रेस्ट कैंसर

आईसीएमआर ने एक हालिया अध्ययन में इस बात की पुष्टि की है कि ब्रेस्ट कैंसर भारत में महिलाओं को होने वाले तीन प्रमुख कैंसर में से एक है। टीम ने कैंसर को लेकर किए गए 31 अध्ययनों की समीक्षा की जिसमें 27,925 प्रतिभागी शामिल थे। इनमें से 45 प्रतिशत को ब्रेस्ट कैंसर का पता चला था। अध्ययन में पाया गया कि प्रजनन का समय, हार्मोनल एक्सपोजर, पेट पर बढ़ती चर्बी और कैंसर की फैमिली हिस्ट्री जैसे कारक मुख्य रूप से भारतीय महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के जोखिमों को बढ़ाते जा रहे हैं, जिसको लेकर विशेष सावधानी और बचाव की आवश्यकता है।

ऐसे करें बचाव

अध्ययनकर्ताओं ने कहा, चूंकि कम उम्र के लोग भी कैंसर की चपेट में आ रहे हैं, 20 से कम उम्र की लड़कियों में भी जोखिम देखे जा रहे हैं इसलिए जरूरी है कि कैंसर से बचाव को लेकर विशेष सावधानी बरती जाए। नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के अनुसार, ब्रेस्ट कैंसर से बचे रहने के लिए जल्दी गर्भधारण प्लान करना, शराब-धूम्रपान से बचाव, वजन कंट्रोल रखना, शारीरिक रूप से सक्रिय रहना और बच्चे के जन्म के बाद कई महीनों तक ब्रेस्टफीडिंग कराना जरूरी है। प्रदूषण से बचाव, प्लास्टिक का कम संपर्क और फैमिली हिस्ट्री का ध्यान में रखते हुए जांच कराते रहना भी कैंसर के खतरे को कम करने में मददगार हो सकते हैं।

हंसना मना है

सत्संग चल रहा था, पंडित जी बता रहे थे, जो नर है वो अगले जन्म में भी नर ही बनेगा और जो नारी है, वो अगले जन्म में भी नारी ही बनेगी! एक बुढ़िया उठकर जाने लगी तो पंडित जी ने पूछा क्या हुआ? बुढ़िया बोली- जब अगले जन्म में भी रोटियां ही बनानी है तो सत्संग सुनने का क्या फायदा?

लड़की- तुम क्या कर रहे हो?
लड़का-मच्छर मार रहा हुं, लड़की- कितने मारे? लड़का-5 मारे, 3 फिमेल और 2 मेल, लड़की- कैसे पता चला, मेल है या फिमेल, लड़का- 3 आईने के पास बैठे थे ओर 2 बियर के पास?

टीचर- तुम परिंदो के बारे में सब जानते हो? संजू- हां टीचर- अच्छा ये बताओ कौन सा परिंदा उड़ नहीं सकता? संजू - मरा हुआ परिंदा? भाग पागल कहीं का?

पिंटू साइकिल से बाजार जा रहा था। एक विदेशी आदमी आया और उसने पिंटू को रोका। पिंटू- ऐसे आचनक से सामने आ गया, मरेगा क्या? विदेशी- मुझे ताज महल जाना है। पिंटू- तो जा ना। सबको बताता रहेगा तो पहुंचेगा कब?

कहानी — श्री कृष्ण ने दिखाया ब्रह्मांड

यह बात उस समय की है जब दुष्टों को मारने और देश में धर्म की स्थापना के लिए भगवान विष्णु ने कृष्ण का अवतार लिया था। द्वापर युग की यह घटना कृष्ण भगवान के बाल जीवन से जुड़ी है, जब वह नंदगांव में मां यशोदा की देखरेख में बड़े हो रहे थे। उस समय उनके नटखट स्वभाव की चर्चा पूरे वृन्दावन में थी। एक दिन की बात है, भगवान श्री कृष्ण घर के बाहर मिट्टी के आंगन में खेल रहे थे। उसी समय उनके बड़े भाई दाऊ वहां आए और देखा कि कन्हैया मिट्टी खा रहे हैं। दाऊ ने उनकी शिकायत लेकर मां यशोदा के पास पहुंचे। दाऊ ने कहा- मां, तुम्हारा प्यारा लाला आंगन में मिट्टी खा रहा है। यह सुनते ही यशोदा मां सीधे बाल गोपाल के पास पहुंची और पूछा- लाला, तुमने मिट्टी खाई है। कान्हा बोले- नहीं, मां मैंने मिट्टी नहीं खाई। मां यशोदा को कान्हा की बात पर विश्वास नहीं हुआ और कहा- कान्हा, मुंह खोलकर दिखाओ कि तुमने मिट्टी नहीं खाई है। मां यशोदा की बात सुनकर कान्हा ने जैसे ही मुंह खोला, मैया यशोदा चौंक गई। माता को कान्हा के मुंह में मिट्टी कहीं नहीं नजर आई, बल्कि पूरा का पूरा ब्रह्मांड नजर आ रहा था। मां यशोदा को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। अपने छोटे से कन्हैया के मुंह में उन्हें सारी सृष्टि और जगत के समस्त प्राणी नजर आ रहे थे। मां यशोदा ये नजारा ज्यादा देर तक नहीं देख सकीं और बेहोश हो गईं। जब मां यशोदा की आंखें खुलीं, तो उनके मन में बाल कृष्ण के लिए प्यार जाग रहा था। उन्होंने श्री कृष्ण को गले से लगा लिया और उनकी आंखें आंसुओं से भर गई। मां यशोदा को यकीन हो गया था कि कान्हा कोई साधारण बालक नहीं है, बल्कि वो स्वयं सृष्टि के स्वामी और परमात्मा के अवतार हैं।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — सुख के साधन जुटेंगे। कानूनी बाधा दूर होगी। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। लाभ में वृद्धि होगी। कुसंगति से बचें। परिवार में मांगलिक कार्यक्रमों की चर्चा संभव है।

वृषभ — शत्रु सक्रिय रहेंगे। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। क्रोध पर नियंत्रण रखें। विवाद न करें। उतावली में कोई काम न करें। व्यापार अच्छा चलेगा।

मिथुन — विवाद से क्लेश होगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। व्यवसाय ठीक करेगा। व्यापार में नए प्रस्ताव लाभकारी रहेंगे।

कर्क — शत्रु सक्रिय रहेंगे। घर-बाहर तनाव रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। संपत्ति के कार्य लाभप्रद रहेंगे। भावनात्मक संबंधों में जल्दबाजी में निर्णय न लें।

सिंह — यात्रा मनोरंजक रहेगी। स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। विद्यार्थी सफल रहेंगे। धनार्जन होगा। पूँजी निवेश संबंधी कार्यों में सावधानी रखें। आत्मविश्वास बना रहेगा।

कन्या — दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। भागदौड़ रहेगी। दु:खद समाचार मिल सकता है। धैर्य रखें। काम का बोझ कम करने के लिए जिम्मेदारियों को बांटना आवश्यक है।

तुला — प्रयास सफल रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। धन प्राप्ति सुगम होगी। व्यस्तता रहेगी। प्रसन्नता बढ़ेगी। कारोबार में वांछित तेजी आने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक — लेन-देन में सावधानी रखें। मेहमानों का आगमन होगा। शुभ समाचार मिलेंगे। मान बढ़ेगा। धनार्जन होगा। रोजगार के बेहतर अवसर मिलने से आय बढ़ेगी।

धनु — कोई बड़ा कार्य होने से प्रसन्नता रहेगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। मेहनत व लगन से कार्यक्षेत्र में बेहतर सफलता हासिल कर सकेंगे। रोजगार में वृद्धि होगी।

मकर — कोई मुसीबत आ सकती है। लेन-देन में सावधानी रखें। फालतू खर्च होगा। जोखिम न उठाएं। व्यावसायिक योजना के विस्तार में मित्रों से मदद मिलेगी।

कुम्भ — बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। यात्रा लाभदायक रहेगी। धनार्जन होगा। घर की चिंता रहेगी। विरोधी भी आपसे प्रभावित होंगे। आवास संबंधी समस्या हल होने के योग हैं।

मीन — शत्रु परास्त होंगे। क्रोध पर नियंत्रण रखें। नए अनुबंध हो सकते हैं। प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साझेदारी में शुरू किया गया कार्य लाभ के अवसरों को बढ़ा सकता है।

बॉलीवुड | मन की बात

स्मोकिंग के लिए जेल में भी हो खास जगह : राजपाल यादव

राजपाल यादव ने जेल से रिहाई के बाद मुश्किल वक्त में साथ खड़े होने के लिए इंडस्ट्री और प्रशंसकों का शुक्रिया अदा किया है। न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, राजपाल यादव ने जेल से रिहा होने के बाद आज बुधवार को फिल्म इंडस्ट्री और दर्शकों को उनके सपोर्ट के लिए शुक्रिया अदा किया। साथ ही उन्होंने जेल अधिकारियों से जेल के अंदर स्मोकिंग रूम बनाने की अपील भी की। चेक बाउंस केस में तिहाड़ जेल से रिहा होने के बाद शाहजहांपुर जिले में अपने पुश्तैनी गांव में बात करते हुए राजपाल यादव ने कहा कि उन्हें लोगों से बहुत प्यार मिला। एक्टर ने आगे कहा, रेलवे स्टेशनों और एयरपोर्ट की तरह जेलों के अंदर भी स्मोकिंग के लिए खास जगह होनी चाहिए। अभिनेता ने इस बात पर भी जोर दिया कि जेलों को सुधार सेंटर की तरह काम करना चाहिए, जहां कैदियों को बदलने के लिए सही मौके दिए जाने चाहिए। हालांकि, जो लोग सुधार नहीं करना चाहते, उनके लिए कानून सबसे ऊपर है। उन्होंने आगे कहा, बाहर से यह तय करना अक्सर मुश्किल होता है कि कौन पक्का अपराधी है और किसने एक बार की गलती की है। राजपाल ने कहा, मेरे वकील भास्कर उपाध्याय सभी कानूनी सवालों का ऑफिशियली जवाब देंगे। उन्होंने यह भी कहा कि परिवार में शादी होने की वजह से वह अगले दो दिनों तक मीडिया से बात नहीं करेंगे और बाद में प्रेस कॉन्फ्रेंस करके सवालों के जवाब देंगे। राजपाल यादव ने कहा कि वह भारत में पैदा हुए। उन्होंने कभी अपना पासपोर्ट नहीं बदला और अपने गांव में वोटर बने रहे। एक्टर ने कहा, मैं अपनी कमाई बढ़ाना चाहता हूं। अपनी करेंसी नहीं बदलना चाहता। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें सहानुभूति नहीं, बल्कि समय चाहिए। अगर उनकी तस्वीरों या वीडियो से दूसरों को फायदा होता है तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्होंने कहा, राजपाल यादव पर हंसो या राजपाल यादव की वजह से हंसो।

जुनूनी आशिक बने रवि किशन तेजस्वी प्रकाश का दिखा दमदार अंदाज

रवि किशन एक मंझे हुए कलाकार हैं, हर किरदार में जान डाल देते हैं। आज उनकी अपकमिंग सीरीज 'साइको सैयां' का ट्रेलर रिलीज हुआ। इसमें 'नागिन' से फेमस हुईं टीवी एक्ट्रेस तेजस्वी प्रकाश भी एक अहम किरदार निभा रही हैं। जानिए, क्या खास दिखा 'साइको सैयां' के ट्रेलर में।

दो मिनट के इस ट्रेलर में सबसे पहले कार्तिक (अनुद सिंह) की एंट्री होती है। वह उज्जैन का एक लड़का है, जिसकी दुनिया तब उलट जाती है, जब वह चारू से मिलता है। चारू का रोल तेजस्वी प्रकाश ने निभाया है। ट्रेलर में पहले रोमांस नजर आता है, लेकिन जैसे जैसे ट्रेलर आगे बढ़ता है, कार्तिक का प्यार जुनून में बदल जाता है। वह शहर में चारू का पीछा करता है। जो भी चारू के करीब आता है, उसे रास्ते से हटाने के लिए कड़े कदम भी उठाता है। फिर ट्रेलर में नजर आते हैं, रवि किशन। वह भी इस सीरीज में एक और जुनूनी आशिक बने हैं। उनके किरदार की एंट्री के बाद कहानी में नए ट्विस्ट आते हैं। इस सीरीज में अपने किरदार के बारे में रवि किशन कहते हैं, 'मेरे किरदार अपने ही नियमों से खेलता है और अपने साथ एक तरह की अनप्रेडिक्टेबिलिटी लाता है। यह एक इंटेंस, बेबाक रोल है। इसे करने में मुझे मजा आया।' इस सीरीज से ओटीटी पर तेजस्वी प्रकाश डेब्यू कर रही हैं। वह कहती हैं, 'साइको सैयां से ओटीटी पर डेब्यू कर रही हूं। मेरे रोल काफी लेयर्ड हैं। मैं इस रोल के लिए शुक्रगुजार हूं।'

'साइको सैयां' का ट्रेलर रिलीज

ये एक्टर्स भी हैं सीरीज का हिस्सा

इस सीरीज में सृष्टि श्रीवास्तव, सुरभि चंदना, वरुण भगत, अश्विनी कालसेकर और यशपाल शर्मा भी सपोर्टिंग रोल में हैं। 'साइको सैयां' 25 फरवरी से अमेजन एमएक्स प्लेयर, प्राइम वीडियो जैसे सभी प्लेटफॉर्म पर फ्री में स्ट्रीम होगी।

करियर डिफाइनिंग फिल्म है वाराणसी : प्रियंका चोपड़ा

प्रियंका चोपड़ा इन दिनों अपनी हॉलीवुड फिल्म 'द ब्लफ' को लेकर चर्चाओं में हैं। लेकिन अभिनेत्री एसएस राजामौली के निर्देशन में बन रही फिल्म 'वाराणसी' को लेकर काफी उत्साहित हैं। प्रियंका इस फिल्म से भारतीय सिनेमा में वापसी कर रही हैं। यही कारण है कि प्रियंका 'वाराणसी' को अपने लिए काफी खास फिल्म मानती हैं।

प्रियंका चोपड़ा हाल ही में पति निक जोनस के साथ 'द ब्लफ' के वर्ल्ड प्रीमियर में शामिल हुईं। इस दौरान उन्होंने 'वाराणसी' को लेकर खुलकर बात की। एक्ट्रेस ने इसे करियर-डिफाइनिंग बताते हुए कहा कि वाराणसी उनके लिए एक महत्वपूर्ण फिल्म है। सात साल बाद किसी भारतीय फिल्म से दूर रहने के बाद, इस फिल्म को पहले से ही आने वाले समय की सबसे बड़ी सिनेमाई घटनाओं में से एक माना जा रहा है। प्रियंका ने निर्देशक राजामौली को भारत के सर्वश्रेष्ठ फिल्म निर्माताओं में से एक बताया। साथ ही कहा कि वो अपनी इस फिल्म के लिए काफी उत्साहित हैं।

अगले साल 7 अप्रैल को रिलीज होगी फिल्म

एसएस राजामौली द्वारा निर्देशित 'वाराणसी' की घोषणा पिछले साल की गई थी। हैदराबाद में फिल्म का एक बड़ा इवेंट हुआ था, जिसमें फिल्म की पूरी कास्ट नजर आई थी। इस फिल्म में महेश बाबू रुद्र के किरदार में नजर आएंगे। वो फिल्म में भगवान राम के अवतार में भी दिखाई देंगे। इसके अलावा पृथ्वीराज सुकुमारन विलेन की भूमिका निभाएंगे, उनके किरदार का नाम कुंभा है। जबकि प्रियंका चोपड़ा फिल्म में मंदाकिनी के किरदार में दिखाई देंगी। 'वाराणसी' 7 अप्रैल 2027 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

अजब-गजब | ये है राजस्थान का खतरनाक डांस

ये है कालबेलिया समुदाय का पसंदीदा डांस, जिसमें सांप की तरह लहराती थीं महिलाएं, जिसे अंग्रेजों ने कर दिया था बैन

राजस्थान की रेतीली थार मरुस्थल में बसा कालबेलिया समुदाय सदियों से सांपों से जुड़ा रहा है। ये लोग सपेरे थे, सांप पकड़ते, जहर बेचते और पूंगी बजाकर सांपों को नचाते थे। लेकिन ब्रिटिश काल में ये सब 'खतरनाक' माना जाता था।

अंग्रेजों ने सपेरों के इस धंधे और उनके नृत्य को प्रतिबंधित कर दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि ये कबीला जंगली, खतरनाक और समाज के लिए खतरा है। महिलाएं चुपके-चुपके घरों में या दूर-दराज इलाकों में सांप जैसी लचक के साथ नाचती थीं, ताकि परंपरा जीवित रहे। आज वही कालबेलिया डांस दुनिया भर में मशहूर है और 2010 में यूनेस्को ने इसे मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल कर लिया था।

कालबेलिया नृत्य राजस्थान के कालबेलिया जनजाति का पारंपरिक लोक नृत्य है। ये महिलाएं काले घाघरे पहनकर, चांदी के गहनों से सजी हुई, तेज रफ्तार में घूमती हैं। उनके शरीर की लहरें ठीक सांप की तरह होती हैं। कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी तेज, कभी धीमे। ये मूवमेंट्स उनके पूर्वजों के सांप नचाने की याद दिलाते हैं। पुरुष पूंगी (एक तरह की बांसुरी) और खंजरी (ढोलक जैसा वाद्य) बजाते हैं। नृत्य में कोई शब्द नहीं होता है। सिर्फ लय, थिरकन और सांप जैसी फुर्ती होती है। ब्रिटिश राज में सांप पकड़ना और सांप दिखाना बैन हो गया था, क्योंकि अंग्रेजों को लगता था कि ये 'जंगली आदिवासी' हैं और सांपों से जुड़े होने से खतरा है।

कालबेलिया समुदाय को घुमंतू जीवन जीना पड़ता था। सांपों का धंधा बंद होने से वे भटकते फिरते थे। लेकिन महिलाओं ने अपनी परंपरा नहीं छोड़ी। वे चुपके से नाचती रहीं, ताकि संस्कृति बची रहे। 1972 में भारत सरकार ने वाइल्डलाइफ प्रोटेक्शन एक्ट लाया, जिससे सांप पकड़ना पूरी तरह गैरकानूनी हो गया। तब कालबेलिया महिलाओं ने डांस को अपना मुख्य पेशा बना लिया। ये अब पर्यटन में, मेले में और स्टेज पर परफॉर्म करते हैं।

इस डांस को गुलाबो सपेरा जैसी मशहूर डांसर ने दुनिया तक पहुंचाया। वे कालबेलिया डांस की आइकॉन हैं। उनका नृत्य इतना हिप्नोटाइजिंग है कि दर्शक घंटों देखते रह जाते हैं। डांस में महिलाएं घूम-घूमकर थकती नहीं, बल्कि तेज होती जाती हैं। ये 'डांस ऑफ द डेजर्ट' कहलाता है। यूनेस्को ने 2010 में 'कालबेलिया फोक सॉन्स एंड डांसेज ऑफ राजस्थान' को इंटैंजिबल कल्चरल हेरिटेज घोषित किया था। ये भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है। लेकिन समुदाय आज भी हाशिए पर है। ज्यादातर घुमंतू जीवन जीते हैं, गरीबी है। डांस से कमाई होती है, लेकिन वो काफी नहीं पड़ती। यह कहानी बताती है कि कैसे एक 'खतरनाक' मानी गई परंपरा आज गर्व का विषय बन गई है। ब्रिटिश बैन ने इसे दबाने की कोशिश की, लेकिन महिलाओं की हिम्मत से ये जीवित रहा।

इसे कहा जाता है गूंग महल, जिसने छीन ली 12 बच्चों की आवाज, ना कभी बोल पाए ना समझ पाए

शहंशाह अकबर, जिन्हें इतिहास में धार्मिक सहिष्णुता और बुद्धिमत्ता के लिए जाना जाता है, ने एक ऐसा प्रयोग किया था जिसने 12 निर्दोष बच्चों की जिंदगी हमेशा के लिए बदल दी। इस प्रयोग ने बच्चों को हमेशा के लिए गूंगा कर दिया। यह घटना 16वीं शताब्दी के अंत में हुई, जब अकबर भाषा की उत्पत्ति के बारे में उत्सुक थे। अपनी उत्सुकता और उसके जवाब के लिए उन्होंने बारह मासूम बच्चों की बलि चढ़ा दी। इस एक्सपेरिमेंट का उद्देश्य ये जानना था कि क्या इंसान जन्म से किसी भाषा को जानता है? इसके लिए लिया गया ऐसा फैसला जिसने अकबर को बदनाम कर दिया। उस समय विद्वानों में बहस चल रही थी कि क्या भाषा जन्मजात होती है या सीखी जाती है? क्या बच्चे बिना सुने कोई प्राकृतिक भाषा बोले सकते हैं, जैसे संस्कृत, अरबी या हिब्रू? या फिर भाषा सुनने और सीखने से आती है? अकबर ने फैसला किया कि वे इस सवाल का जवाब प्रयोग से लेंगे। उन्होंने एक अलग महल बनवाया, जिसे 'गंग महल' या 'गूंग महल' कहा गया। इसमें नवजात शिशुओं को रखा गया। इन बच्चों की देखभाल मूक (गूंगी) नर्सों या नर्सों के हाथों में सौंपी गई, जिन्हें सख्त हिदायत थी कि वे बच्चों से कभी बात ना करें, ना कोई आवाज निकालें। महल में किसी को भी बोलने की इजाजत नहीं थी। बच्चे पूरी तरह से भाषा से वंचित रहें, ताकि देखा जा सके कि वे खुद से क्या भाषा बोलते हैं या बिल्कुल चुप रहते हैं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, अकबर का मानना था कि भाषा सुनने से आती है, इसलिए बिना सुने बच्चे मूक रहेंगे। अन्य संस्करणों में कहा गया कि वे मूल भाषा (प्राइमल लैंग्वेज) खोज रहे थे, जो ईश्वर ने इंसान को दी होगी। मुगल दरबार के इतिहासकार अबुल फजल की 'आइन-ए-अकबरी' और 'अकबरनामा' में इस प्रयोग का जिक्र है। 1578 के आसपास शुरू हुआ यह प्रयोग करीब 3-4 साल चला था। 1582 में अकबर खुद महल गए। वहां उन्होंने देखा कि बच्चे कोई शब्द नहीं बोल रहे थे। ना कोई रोना, ना चीख, ना बातचीत। सिर्फ मूक आवाजें या इशारे। अबुल फजल ने लिखा, कोई तिलिस्म-ए-बोल नहीं निकला, सिर्फ गूंगों की आवाजें थीं। कुछ रिपोर्ट्स में बच्चे 12 बताए गए हैं, कुछ में 20-30। बदायूंनी जैसे आलोचक ने इसे अकबर की धार्मिक जिज्ञासा से जोड़ा, जहां वे देखना चाहते थे कि बच्चे किस धर्म की भाषा बोलेंगे। लेकिन नतीजा निराशाजनक रहा। बच्चे बोल नहीं पाए। वे इशारों से बात करते थे। एक दिलचस्प बात यह है कि 'गंग' शब्द सिर्फ 'गूंगा' नहीं, बल्कि 'इशारों से बात करने वाला' भी मतलब रखता था। मूक नर्सें शायद आपस में इशारे करती थीं, और बच्चों ने भी वैसा ही सीख लिया। यानी मौखिक भाषा नहीं आई, लेकिन एक तरह की साइन लैंग्वेज विकसित हो गई।

मप्र विस में हंगामा, भाजपा और कांग्रेस में बहस

विजयवर्गीय ने नेता प्रतिपक्ष सिंघार से कहा- औकात में रहो

» बवाल मचने पर सीएम ने मांगी माफी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। विधानसभा के बजट सत्र में राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान सदन का माहौल गरमा गया। बेरोजगारी, बिजली दरों, आरक्षण, निवेश से जुड़े मुद्दों पर सत्ता पक्ष और विपक्ष आमने-सामने आ गए। तीखी नोकझोंक के बीच कई बार कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी। अंत में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विवाद खत्म करने के लिए माफी मांगी, जिसके बाद स्थिति सामान्य हुई। राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने आरोप लगाया कि सरकार 25 साल में बिजली खरीद के नाम पर एक से सवा लाख करोड़ रुपये अदाणी समूह को देने की तैयारी में है।

प्रदेश में महंगी बिजली मिल रही है, जबकि प्रदेश के बाहर बिजली बेची जा रही है। इससे जनता को नुकसान हो रहा है। इस पर संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि गलत जानकारी ना दें। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि उनके पास सबूत हैं और वो इसका प्रमाण दे सकते हैं। इस बीच मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने उन्हें औकात में रहने की नसीहत दे दी। इस टिप्पणी पर विपक्ष भड़क गया और सदन में हंगामा शुरू हो गया। विपक्ष के सदस्य गर्भगृह में आकर नारेबाजी करने लगे। इसके बाद सत्ता पक्ष के विधायक भी वेल में आए। हंगामा शांत नहीं होने पर अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित कर दी। सदन की कार्रवाई शुरू होने पर फिर हंगामा शुरू हो गया, जिसके बाद 15 मिनट के लिए फिर सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई। विपक्ष के विधायकों ने कैलाश विजयवर्गीय से माफी की मांग की।

संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने जताया खेद

विजयवर्गीय ने सदन में अपने व्यवहार पर खेद जताते हुए कहा कि 37 साल के राजनीतिक जीवन में वे आज खुद से संतुष्ट नहीं हैं। उन्होंने कहा कि जब अध्यक्ष, मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष जैसे जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग संसदीय मर्यादा नहीं निभाएंगे तो अन्य सदस्यों से कैसे अपेक्षा की जा सकती है। उन्होंने नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार की ओर इशारा करते हुए कहा कि उनकी बॉडी लैंग्वेज से वे विचलित हुए, लेकिन वे उन्हें स्नेह करते हैं और अपने व्यवहार से दुखी हैं।

मर्यादा बनाए रखना सबकी जिम्मेदारी : स्पीकर

सदन की कार्यवाही फिर शुरू होने के बाद विवाद बढ़ने पर विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि आज का दिन कुछ गरम गरम है। सदन के नियम और परंपरा का पालन के साथ मर्यादा बताए रखना सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि आज थोड़ी असहज स्थिति बन गई। अध्यक्ष ने कहा कि आज पूर्व सीएम सुंदरलाल पटवा की याद आ गई। वह कहते थे कि सदन में बात करते समय गुस्सा दिखना चाहिए, लेकिन गुस्सा आना नहीं चाहिए। गुस्सा दिखे, लेकिन आए नहीं, यह लोकतंत्र के लिए जरूरी है।

सिंघार ने माफी मांगी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि यदि किसी को ठेस पहुंची हो तो वे अपनी ओर से सभी से माफी मांगते हैं। इस पर नेता प्रतिपक्ष सिंघार ने कहा कि सीएम ने जो भाव दिखाया, मैं उसका सम्मान करता हूं। मैं चार बार विधायक हूं, संसदीय शब्दावली का ध्यान रखने की कोशिश करता हूं। उन्होंने कहा कि मैं कभी अहम में नहीं आता। यदि मेरी तरफ से कुछ हुआ है तो मैं भी खेद व्यक्त करता हूं।

केरल स्टोरी जैसी फिल्में 'नफरत फैलाने वाली' : शशि थरूर

» कांग्रेस नेता बोले- संवेदनशील मामलों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रचारित करने से बचना चाहिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर ने आगामी फिल्म 'केरल स्टोरी-2' के बारे में कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने पहली फिल्म को 'नफरत फैलाने वाली' करार देते हुए कहा कि हजारों धर्मांतरण के जो दावे किए गए थे, वे पूरी तरह निराधार थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश में कुछ संवेदनशील मामलों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रचारित करने से बचना चाहिए।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर ने 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' की सराहना करते हुए इसे एक बड़ी सफलता बताया है।थरूर ने कहा कि शिखर सम्मेलन के शुरुआती दिन ''बेहद सफल'' रहे और वैश्विक स्तर के इतने बड़े आयोजनों में ''कुछ छोटी-मोटी गड़बड़ियां'' होना एक सामान्य बात है। थरूर ने कहा कि राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों और वैश्विक नेताओं की उपस्थिति प्रभावशाली रही, जो यह संदेश देना चाहते हैं कि कृत्रिम मेधा (एआई) के विकास में दुनिया एक नयी दिशा में आगे बढ़े। थरूर ने कहा कि शिखर सम्मेलन के शुरुआती दिन बेहद अच्छे रहे, लेकिन कुछ गड़बड़ियां हुई हैं, जो बड़े आयोजनों में आम बात है। उनकी यह टिप्पणी कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के उस बयान के बाद आई जिसमें उन्होंने एआई शिखर सम्मेलन को अव्यवस्थित प्रचार कार्यक्रम कहा और आरोप लगाया कि वहां चीनी उत्पाद प्रदर्शित किए जा रहे हैं।

मतदाता सूची को पूरी तरह डिजिटल रूप में सभी के लिए उपलब्ध कराएं : उदित

» कांग्रेस ने चुनाव आयोग पर उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश में डिजिटल पहचान और डिजिटल भुगतान की बड़ी व्यवस्था खड़ी हो चुकी है, लेकिन मतदाता सूची को पूरी तरह डिजिटल रूप में सभी के लिए उपलब्ध न कराने पर कांग्रेस ने सवाल उठाए हैं। कांग्रेस नेता उदित राज ने कहा कि जब 1.4 अरब लोगों का आधार डाटा डिजिटल है तो वोटर लिस्ट को इलेक्ट्रॉनिक रूप में देने में दिक्कत क्यों है। उन्होंने चुनाव आयोग से पारदर्शिता की मांग की है। मतदाता सूची में डुप्लीकेशन रोकने के लिए मजबूत डिजिटल उपाय क्यों लागू नहीं किए गए?

जहां डिजिटल सिस्टम की जरूरत है, वहां पारदर्शी व्यवस्था क्यों नहीं बनाई जा रही? राहुल गांधी की इलेक्ट्रॉनिक मतदाता सूची की मांग पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई? कांग्रेस का कहना है कि जब डिजिटल भुगतान, स्वास्थ्य आईडी और अन्य सेवाएं सफलतापूर्वक चल रही हैं, तो मतदाता सूची को भी पूरी तरह डिजिटल और सार्वभौमिक रूप से उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इससे पारदर्शिता बढ़ेगी और दोहराव या गड़बड़ी की आशंका कम होगी। चुनाव आयोग की ओर से इस पर औपचारिक प्रतिक्रिया का इंतजार है। अब देखना होगा कि मतदाता सूची के डिजिटलीकरण को लेकर क्या कदम उठाए जाते हैं और क्या सभी नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक पहुंच मिलती है।

सांस्कृतिक रूप से असंवेदनशील हैं पीएम

» रामकृष्ण के नाम में स्वामी पर बवाल

» सीएम ममता बोलीं- उनके नाम का दुरुपयोग किया गया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर संत रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर उनके नाम के कथित दुरुपयोग को लेकर तीखा प्रहार किया। फेसबुक पर एक पोस्ट के माध्यम से बनर्जी ने प्रधानमंत्री को सांस्कृतिक रूप से असंवेदनशील बताया। एक बार फिर स्तब्ध! हमारे प्रधानमंत्री ने एक बार फिर बंगाल की महान हस्तियों के प्रति अपनी सांस्कृतिक असंवेदनशीलता का आक्रामक प्रदर्शन किया है।

उन्होंने फेसबुक पर लिखा आज

युगावतार श्री श्री रामकृष्ण परमहंसदेव की जन्मतिथि है। इस अवसर पर महान संत को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, हमारे प्रधानमंत्री ने उनके नाम के आगे अभूतपूर्व और अनुचित उपसर्ग स्वामी जोड़ दिया है। रामकृष्ण की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। अपने ट्वीट में नरेंद्र मोदी ने रामकृष्ण को संबोधित करने से पहले स्वामी शब्द का प्रयोग किया, जिसकी ममता बनर्जी के साथ-साथ तृणमूल के कई प्रमुख नेताओं, जिनमें पार्टी प्रवक्ता कुणाल घोष भी शामिल हैं, ने आलोचना की। पश्चिम बंगाल में रामकृष्ण परमहंस को ठाकुर या श्री रामकृष्ण के नाम से जाना जाता है और तृणमूल के कई नेताओं ने इस बात पर जोर दिया। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही तृणमूल कांग्रेस और भाजपा एक बार फिर आमने-सामने आ गए हैं। इससे पहले ममता बनर्जी की पार्टी ने भाजपा पर बंगाल विरोधी होने का आरोप लगाया था।

श्री रामकृष्ण देव के मामले में ठाकुर शब्द का प्रयोग किया जाता है

कुणाल घोष ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज ठाकुर श्री रामकृष्ण परमहंस देव की जयंती पर एक पोस्ट किया। आम तौर पर स्वामी शब्द का प्रयोग पूजा या गुरुदेव से संबंधित मामलों में किया जाता है। श्री रामकृष्ण देव के मामले में, इसका प्रयोग उस समानार्थक अर्थ में नहीं किया जाता है। ठाकुर शब्द का प्रयोग किया जाता है। बंगाल की परंपरा में, उन्हें ठाकुर श्री रामकृष्ण परमहंस देव के नाम से जाना जाता है। उन्होंने प्रधानमंत्री से अपने ट्वीट में उपसर्ग के प्रयोग को सुधारने का भी आग्रह किया।

अजेय रहते हुए सुपर-8 में पहुंचा जिम्बाब्वे

» श्रीलंका को उसके घर में छह विकेट से दी करारी शिकस्त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलंबो। ब्रायन बेनेट की तूफानी अर्धशतकीय पारी की मदद से जिम्बाब्वे ने श्रीलंका को छह विकेट से करारी शिकस्त दी। इसी के साथ सिकंदर रजा की अगुवाई वाली टीम ने टी20 विश्वकप 2026 में ग्रूप स्टेज का अजेय रहते हुए समापन किया और सुपर-8 में शानदार एंट्री की। कोलंबो में खेले गए 38वें मुकाबले में श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में सात विकेट पर 178 रन बनाए। जवाब में जिम्बाब्वे ने तीन गेंदों के शेष रहते 182 रन बनाए और मुकाबला अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ जिम्बाब्वे की टीम ने ग्रूप बी की टेबल टॉपर भी बन गई।

लीग चरण में खेले चार मुकाबलों में उसने तीन मैचों में शानदार जीत दर्ज की। वहीं, एक मैच बेनतीजा रहा। टीम सात अंक और + 1.506 के नेट रन रेट के साथ शीर्ष पर पहुंच गई। इस हार के साथ मेजबान श्रीलंका दूसरे स्थान पर खिसक गई। उसके खाते में छह अंक और +1.741 का नेट रन रेट है। ग्रूप बी से सुपर-8 के लिए जिम्बाब्वे और श्रीलंका की टीमें पहले ही क्वालिफाई कर चुकी हैं। वहीं, आयरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और ओमान का सफर ग्रूप स्टेज में ही समाप्त हो गया है। इस ग्रूप का आखिरी मुकाबला ऑस्ट्रेलिया और ओमान के बीच खेला जाना है।(जिम्बाब्वे ने श्रीलंका को हराकर टी20 विश्वकप 2026 में एक बार फिर बड़ा उलटफेर कर दिया। इससे पहले टीम ने ग्रूप स्टेज में ऑस्ट्रेलिया को 23 रन से हराया था। जिम्बाब्वे की टीम सुपर-8 में भारत, वेस्टइंडीज और साउथ अफ्रीका के साथ ग्रूप-1 में है, जबकि श्रीलंकाई टीम न्यूजीलैंड, इंग्लैंड और पाकिस्तान के साथ ग्रूप-2 में है।

सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने वाली महिला खिलाड़ी बनीं हरमनप्रीत

कैनबरा। भारतीय महिला टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने गुरुवार को इतिहास रच दिया। वह सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेलने वाली शीर्ष महिला खिलाड़ी बन गईं। इस मामले में उन्होंने न्यूजीलैंड की दिग्गज खिलाड़ी सूजी बेट्स को पीछे छोड़ दिया। दूसरे टी20 मुकाबले में उतरते ही भारतीय महिला टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली। यह उनका 356वां अंतरराष्ट्रीय मुकाबला था। इससे पहले यह रिकॉर्ड न्यूजीलैंड की सूजी बेट्स के नाम दर्ज था, जिन्होंने 356 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले। इस मैच में ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए जॉर्जिया वॉल (88) की अर्धशतकीय पारी की मदद से 20 ओवर में पांच विकेट पर 163 रन बनाए। जवाब में भारतीय महिला टीम निर्धारित ओवरों में नौ विकेट पर 144 रन ही बना सकी। भारत के लिए कप्तान हरमनप्रीत कौर ने सर्वाधिक 36 रनों की पारी खेली। इस जीत के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन टी20 मैचों की सीरीज में 1-1 की बराबरी कर ली। इस सीरीज का निर्णायक और अंतिम मुकाबला 21 फरवरी को एडिलेड में खेला जाएगा।

सस्ती लोकप्रियता के लिए किया गया साजिशन केस : राहुल गांधी

» शाह पर टिप्पणी का मामलाः अब 9 मार्च को होगी अगली सुनवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सुल्तानपुर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को सुल्तानपुर में एमपी-एमएलए कोर्ट में अपना बयान दर्ज कराया। उन्होंने अपने ऊपर लगे आरोपों को निराधार बताते हुए खुद को बेगुनाह बताया। नेता प्रतिपक्ष ने करीब 27 मिनट तक वह जज के समक्ष अपनी सफाई पेश की। उन्होंने कहा कि सस्ती लोकप्रियता के लिए मुझ पर साजिशन केस किया गया है। इस संबंध में शीघ्र प्रमाण कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत करूंगा।

बता दें कि इसके पूर्व की सुनवाई में राहुल गांधी अदालत में उपस्थित नहीं हुए थे। उनके अधिवक्ता काशी प्रसाद शुक्ल ने उन्हें केरल में होने का प्रार्थना पत्र देकर समय मांगा था। कोर्ट ने मामले में सफाई साक्ष्य पेश करने के लिए अगली तारीख 9 मार्च निर्धारित की है। करीब आधे घंटे तक कोर्ट कक्ष का दरवाजा बंद करके मानहानि मामले में धारा 313 के तहत बयान दर्ज करने की प्रक्रिया चली। इस दौरान अदालत परिसर में समर्थकों की भारी भीड़ जुटी रही। भीड़ को नियंत्रित करने में सुरक्षाकर्मियों को काफी मशक्कत करनी पड़ी। व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त सतर्कता बरती गई। दरअसल, कर्नाटक में एक प्रेसवार्ता के दौरान राहुल द्वारा केंद्रीय मंत्री अमित शाह पर अपमानजनक टिप्पणी का आरोप है। इसे लेकर जिला सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष व भाजपा नेता विजय मिश्र ने राहुल के विरुद्ध दीवानी में मानहानि का परिवाद दायर किया था। इस मामले में राहुल 26 जुलाई 2024 को पेश हुए थे। उसके बाद से वह सुनवाई की तिथि के दिन अनुपस्थित होते रहे। 19 जनवरी को जब वह हाजिर नहीं हुए तो अदालत ने उन्हें 20 फरवरी को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का आदेश दिया था।

एमपी-एमएलए कोर्ट में पेश हुए नेता प्रतिपक्ष

इससे पहले वह लखनऊ एयरपोर्ट से सड़क मार्ग से सुल्तानपुर पहुंचे। वहां एमपी-एमएलए कोर्ट में पेश हुए। उन्हें बयान दर्ज कराने के लिए कोर्ट ने आज आखिरी मौका दिया था। इस दौरान दीवानी न्यायालय की सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रही। इससे पहले डॉग स्कायड ने परिसर की तलाशी ली। सुरक्षा में कोई चूक न हो, इसके लिए एक एएसपी व चार सीओ समेत भारी पुलिस बल को तैनात हैं।

लौटते समय मोची की दुकान पर रुके राहुल, रामचेत की मौत पर व्यक्त किया दुख

यूपी के सुल्तानपुर में कोर्ट में बयान दर्ज कराकर लौटते समय राहुल गांधी अयोध्या-प्रयागराज हाईवे के गुप्तारगंज स्थित रामचेत मोची की दुकान पर रुके। उन्होंने रामचेत के परिवार से बात की। उनके बेटे से परिवार का हाल जाना। इसके बाद लखनऊ के लिए निकल गए। राहुल गांधी ने विधायक नगर चौराहा स्थित रामचेत मोची के बेटे राघव दुकान पर थे। राहुल गांधी करीब सात मिनट उनकी दुकान पर रुके। रामचेत की मौत पर श्रंद्धाजलि अर्पित की। बेटे राघव से कहा कि वह रामचेत की मृत्यु पर नहीं आ पाए। राघव की बिटिया श्रद्धा को अपनी गोदी में उठाया। उसे चाकलेट दी और दुलार किया। राघव को आश्वासन दिया कि जब भी जरूरत पड़ेगी वह उनकी मदद के लिए खड़े हैं।

मोदी सरकार की कूटनीति विफल हो रही : जयराम

» शहबाज शरीफ और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की मुलाकात पर पीएम को कांग्रेस ने घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एआई इम्पैक्ट समिट को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर परोक्ष रूप से हमला करते हुए कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने शुक्रवार को कहा कि स्वघोषित विश्वगुरु दुनिया को संक्षिप्त शब्दों के माध्यम से ज्ञान देने में व्यस्त हैं। एक्स पर एक पोस्ट में वाशिंगटन डीसी में बोर्ड ऑफ पीस कार्यक्रम के दौरान पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की मुलाकात पर प्रतिक्रिया देते हुए, रमेश ने कहा कि अमेरिका और पाकिस्तान के बीच संबंध पहले की तरह ही मजबूत हैं। रमेश ने आरोप लगाया कि पाकिस्तान को 22 अप्रैल, 2025 के पहलगाम आतंकी हमले की साजिश रचने के लिए वैश्विक मंच पर कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी है, और इसे मोदी सरकार की कूटनीति पर एक निराशाजनक टिप्पणी बताया, जिसे किसी भी तरह की तोड़-मरोड़ से मिटाया नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि वाशिंगटन में हाल के घटनाक्रमों से यह स्पष्ट है।

रमेश ने कहा कि जब यह सब हो रहा था, तब प्रधानमंत्री नारों और संक्षिप्त शब्दों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि मजबूत करने और कॉरपोरेट जगत के नेताओं को उनके साथ एकजुटता दिखाने के लिए मजबूर करने में व्यस्त थे। एक्स पोस्ट में कहा गया कि अमेरिका और पाकिस्तान के बीच का रोमांस बेरोकटोक जारी है। कल वाशिंगटन डीसी में एक बार फिर इसका प्रदर्शन देखने को मिला। यह मोदी शासन है, जो भारत को नुकसान पहुंचाने वाला अधिकतम दिखावा है।

यूपी विस में महंगाई को लेकर जोरदार हंगामा

» विपक्ष ने बेरोजगारी, पलायन पर भी योगी सरकार को घेरा

» बोतल महंगी की बात पर एक-दूसरे पर कसा तंज

» चली-चला की बेला है : माता प्रसाद पांडेय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा में हंगामा जारी है। विपक्ष का भाजपा सरकार पर वार और तीखा हो गया है। महंगाई को लेकर सदन में जोरदार वा-पलटवार हुआ। बोतल महंगी की बात पर एक-दूसरे पर तंज कसे गए।

विपक्ष ने यूपी से पलायन की बात उठाई तो जवाब में मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि पलायन शब्द अब यूपी से बाहर हो गया है। आज दुनियाभर में सबसे ज्यादा डिमांड यूपी के कामगारों की है। नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय ने सरकार पर तंज कसा कि इस बार चली-चला की बेला है।

हम केवल केंद्र सरकार को रिपोर्ट दे सकते हैंः मंत्री

मंत्री ने कहा कि हम केवल केंद्र सरकार को रिपोर्ट दे सकते हैं। नौ वर्षों में सरकार ने एक भी टैक्स नहीं लगाया। बोतल की बात पर तंज कसते हुए कहा कि इन लोगों को बोतल की बड़ी चिंता है। बोतल के दाम तो बढ़ गए हैं। इसका सपा ने विरोध किया। इस पर कुछ देर के लिए हंगामा हुआ। खाद के दाम प्रदेश सरकार नहीं कम कर सकती। वह केंद्र सरकार ही कर सकती है।

रोजगार मेलों की सपा ने खोली पोल

सपा विधायक संग्राम सिंह ने बेरोजगारी का मुद्दा उठाया। उन्होंने सरकार द्वारा लगाए जा रहे रोजगार मेलों की पोल खोलते हुए आंकड़े पेश किए। उन्होंने कहा कि आजमगढ़, देवरिया और गोरखपुर समेत अन्य जिलों से युवा नौकरी को दूसरे राज्यों को गए। यदि रोजगार दिया जा रहा है तो युवा बाहर क्यों जा रहे हैं? सरकार पलायन रोकने के लिए क्या कर रही है?

किसान परेशान, बिचौलिया मालामाल : आरके वर्मा

सपा विधायक आरके वर्मा ने महंगाई पर सवाल पूछा। उन्होंने कविता से सरकार पर निशाना साधा। तेल की बोतल पूछ रही है ये, पहले तुम ही खरीदते तो मुझे...आज क्यों सोच रहे हो। उन्होंने कहा कि आलू किसान परेशान हैं। बिचौलिया मालमाल हैं। इसके जवाब में मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि निविदा में कार्य अवधि निर्धारित होती है। कंपनियां बदल सकती हैं, लेकिन कर्मी नहीं बदले जाते हैं। ये आदेश 2009, 2016 के हैं। हमने इसमें कोई निर्णय नहीं लिया है।

बाबरी मस्जिद न बनने की मांग वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट का सुनवाई से इनकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आज उस याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया जिसमें बाबर के नाम पर कोई भी मस्जिद नहीं बनाने देने की मांग की गई थी। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने इस याचिका को खारिज कर दिया।

याचिककर्ता के वकील ने तर्क दिया कि बाबर के नाम पर देश में किसी भी मस्जिद का निर्माण नहीं होना चाहिए, याचिकाकर्ता के वकील ने बाबर को आक्रांता बताया है। कोर्ट में दलील दी गई कि बाबर ने हिंदुओं को गुलाम कहा था, याचिका में मांग की गई है कि ऐसे लोगों के खिलाफ तो कार्रवाई की जानी चाहिए।

सेंगर के भाई को नहीं मिली जमानत

» उन्नाव रेप पीड़िता के पिता की हिरासत में मौत के केस में हाईकोर्ट का फैसला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने उन्नाव रेप पीड़िता के पिता की हिरासत में मौत मामले में दोषी जयदीप सिंह सेंगर को राहत देने से साफ इनकार कर दिया है। कोर्ट ने जयदीप की चिकित्सा आधार पर अंतरिम जमानत बढ़ाने की याचिका को खारिज करते हुए उसे सरेंडर करने का आदेश दिया है। दिल्ली हाई कोर्ट ने सख्त निर्देश देते हुए जयदीप सेंगर को कल तक जेल में आत्मसमर्पण करने को कहा है। जयदीप सिंह सेंगर, पूर्व विधायक कुलदीप सिंह सेंगर का भाई है और इस चर्चित मामले में सजा काट रहा है।

जयदीप सेंगर ने अदालत में याचिका दायर कर अंतरिम जमानत बढ़ाने की मांग की थी। याचिका में जयदीप ने दावा किया है कि वह मुंह के एडवांस्ड स्टेज कैंसर से पीड़ित है। याचिका में कहा गया है कि कैंसर के दोबारा उभरने के लक्षण दिख रहे हैं, जिसके लिए उसे तत्काल चिकित्सा उपचार की आवश्यकता है। हालांकि हाई कोर्ट ने अभी तत्काल राहत नहीं दी है, लेकिन चिकित्सा आधार पर दी गई मुख्य अंतरिम जमानत याचिका पर 24 फरवरी को दोबारा सुनवाई करने का निर्णय लिया है।

असम चुनाव की प्रियंका गांधी ने सभांली कमान

» फरवरी के अंत तक जारी होगी प्रत्याशियों की पहली सूची

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहाटी। असम विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने अपनी रणनीति तेज कर दी है, जिसके तहत फरवरी के अंत तक उम्मीदवारों की पहली सूची और मार्च की शुरुआत तक कुल 80 सीटों पर नाम घोषित किए जाएंगे। प्रदेश अध्यक्ष गौरव गोगोई की यह घोषणा प्रियंका गांधी वाड्रा के दौरे के बीच हुई है, जो टिकट वितरण प्रक्रिया की निगरानी कर रही हैं। कांग्रेस ने असम विधानसभा चुनावों के लिए आंतरिक समयसीमा तय कर ली है।

मार्च-अप्रैल में चुनाव होने की उम्मीद है, और पार्टी की राज्य इकाई का कहना है कि उम्मीदवारों की पहली सूची फरवरी के अंत तक जारी कर दी जाएगी, जिसके बाद मार्च की शुरुआत तक लगभग 80 सीटों के लिए उम्मीदवारों के नाम घोषित किए जाएंगे। असम कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई ने समयसीमा का ब्यौरा दिया। उनकी यह घोषणा कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा के संभावित उम्मीदवारों की स्क्रीनिंग के लिए राज्य के दो दिवसीय दौरे से ठीक पहले आई है। गोगोई ने कहा कि हमारा लक्ष्य स्क्रीनिंग प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूरा करना है। केंद्रीय नेतृत्व ने हमें निर्देश दिया है कि पहली सूची इस महीने के अंत तक जारी कर दी जाए। उन्होंने आगे बताया कि मार्च के पहले सप्ताह तक लगभग 80 सीटों के लिए उम्मीदवारों के नाम तय कर लिए जाएंगे और घोषित कर दिए जाएंगे, जिनमें पहली सूची में शामिल उम्मीदवार भी होंगे। 126 सदस्यीय विधानसभा चुनाव की तैयारियों में तेजी लाते हुए, कांग्रेस मार्च की शुरुआत तक कुल 80 उम्मीदवारों के नाम घोषित करने की योजना बना रही है।

व्यक्तिगत रूप से लोगों से मिलकर सुझाव लेंगी सांसद

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने असम विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी के राजनीतिक अभियान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह व्यक्तिगत रूप से लोगों से मिलकर सुझाव लेंगी और टिकटों का प्रभावी वितरण सुनिश्चित करेंगी। आज सुबह शहर पहुंची कांग्रेस सांसद ने टिकट वितरण प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहा कि चयन समिति के सदस्य राज्य के हर जिले का दौरा कर रहे हैं। गांधी ने पत्रकारों से कहा कि मैं सभी से मिल रही हूं और उनके सुझाव और प्रतिक्रिया ले रही हूं। हम दो दिनों तक यही करेंगे, कोशिश करेंगे कि ज्यादा से ज्यादा लोगों से व्यक्तिगत रूप से मिल सकें।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।